गोपाल राजू (वैज्ञानिक)मानस श्री

अ.प्रा. राजपत्रित अधिकारी
ज्योतिष अनुसंधान केन्द्र
30, सिविल लाईन्स
रूड़की-247667 (उत्तराखण्ड)
मोबाइल : 09760111555

"रुद्राक्ष कैसे फलदायी सिद्ध हो....?"

यह उपाय रुद्राक्ष पर आधारित है। रुद्राक्ष भगवान शिव का प्रिया आभूषण है। अंग्रेजी में इसे "UTRASUM BEED" कहते है। संस्कृत में इसका नाम महरुद्राक्ष, शिवाक्ष, नीलकंठाक्ष है। बंगाल में इसे रुद्राक्य, तमिल में अक्कम, तेलगू में रुद्रचल्लु, आसाम में रुद्रई, लुद्राक, गुजरात तथा महाराष्ट्र में इसे रुद्राक्ष आदि नामों से जाना जाता है। रुद्राक्ष धन-धान्य, सुख-आनन्द आदि से लेकर धर्म एवं मोक्ष दाता माना गया है। इसीलिए यह भौतिक वादी लोगों सहित योगी, सन्यासी, तपस्वी, यती, ऋषि-महर्षियों आदि सबका प्रिय है। यदि कहें कि इसमें दैहिक, भौतिक तथा आध्यात्मिक तीनों प्रकार के सुखों को प्राप्त करवाने की अदभुत् क्षमता छुपी हुई है। तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। यहॉ यह भी कहा गया है कि रुद्राक्ष के दर्शन मात्र से समस्त पापों का तथा दारिद्रय का नाश हो जाता है।

आज हमारा सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह है कि इस छोटे से फल की विलक्षणता को परखने के लिए हमारे पास पैनी दृष्टि का सर्वथा अभाव है। इसका कारण है हमारी अज्ञानता और रुद्राक्ष के नाम पर बाजार में हो रही आम धोखाधड़ी है। ठीक-ठीक रुद्राक्ष का चयन इसीलिए हम नहीं कर पाते, यदि ठीक-ठीक हम यह सुनिश्चित कर भी लें कि अमुख मुख वाला रुद्राक्ष हमें रास आएगा तो उसको सुलभ करवाना सरल नहीं है। क्योंकि इनसे ही मिलते नकली तथा भद्राक्ष की बाजार में भरमार है।

वैसे तो तंत्र में विभिन्न आकार-प्रकार तथा रंगों का अलग-अलग विधान है। तथापि अपने उपाय प्रयोजन के लिए आपको आवलें के आकार तथा कथ्थई रंग के रुद्राक्ष लेने हैं। यह सूखा भी नहीं होना चाहिए। इसकी पहचान के लिए देख लें कि इनकी धारियों, गडढों में जड़ सी उपस्थित हैं और ये सूख कर चटख तो नहीं गए हैं।

प्रायः प्रत्येक रुद्राक्ष अपने में धन-धान्य तथा सुख-सम्पत्ति कारक है परन्तु यहॉ इस उपाय में मैं एक, छः, आठ, बारह, चौदह तथा गौरी शंकर रुद्राक्ष के लिए लिख रहा हूॅ क्योंकि इनमें लक्ष्मी को रिझाने का विशेष गुणधर्म छिपा है। सर्वप्रथम अपनी सामर्थ्य-सुविधानुसार इनमें से एक अथवा अधिक रुद्राक्ष उपलब्ध करें। वैसे तो कोई भी रुद्राक्ष अथवा उसकी माला प्रयोग करने से पूर्व उसकी प्राण प्रतिष्ठा, उसके मंत्र अथवा बीज मंत्र जप का विधान है। यह प्रक्रिया जटिल, लम्बी तथा सर्वसाधारण की समझ-पहुॅच से सर्वथा दूर है। सरलतम उपाय यहॉ प्रथम बार लिख रहा हूॅ। प्रथम इसलिए कि इससे पहले यह कहीं भी छपा नहीं है। जो भी विधि-विधान यहॉ दे रहा हूॅ वह अंतः प्रेरणा तदनुसार साधु-साधकों के आदेशानुसार प्रसाद स्वरुप है। किसी भी दिन रुद्राक्ष को सरसों के तेल में डुबोकर रखें। तीसरे दिन इसे निकाल कर तेल साफ करके इसे पंचामृत में

एक दिन के लिए डुबोंकर रखें। अगले दिन इसे निकाल कर साफ करके निम्न प्रकार से पूजा कर सिद्ध करने के उपरांत प्रयोग करें। जो भी एक अथवा अधिक रुद्राक्ष आपने शुद्ध करा है उसे योग्य व्यक्ति से प्राण-प्रतिष्ठत करवा लें। यदि स्वयं कर सकते हैं तो यह सबसे सुंदर है। इस उपाय के लिए वैसे तो अमावस्या की कोई भी काल रात्रि चुनी जाती है परन्तु दीपावली की महानिशा इसके लिए सर्वाधिक उपयुक्त है। तकली से कता हुआ कच्चा सूत तथा चुना हुआ रुद्राक्ष लेकर आप किसी एकांत स्थान में किसी घने पीपल अथवा बड़ के वृक्ष के नीचे जाएं। उसके नीचे जड़ में यह रुद्राक्ष रख दें। इसके चारों ओर 7 बर्फी के टुकड़े तथा एक मुट्ठी साबुत उड़द की काली दाल सजा दें। मन में निरन्तर लक्ष्मी जी का ध्यान बनाएं रखें। अब निम्न लिखित मंत्र का जप करते हुए तथा हाथ से धीरे-धीरे कच्चा सूत वृक्ष पर लपेटते हुए वृक्ष की सात बार उल्टी प्रदक्षिणा करें अर्थात् अपने दाएं हाथ से बाएं हाथ की ओर -

''रमन्ता पुण्या लक्ष्मीर्या पापीस्ता अनीनशम्''

(अथर्व 7/115/4)

अर्थात्-पुण्या लक्ष्मी हमारे घर में रमण करे और जो अनर्थमूल पापिनी है वह विनष्ट हो जाए।

इस प्रकार मंत्र जपते हुए वृक्ष पर आप सात बार कच्चा सूत लपेट दें। उल्टी प्रदक्षिणा का तात्पर्य है प्रायश्चित स्वरुप आप वृक्ष को साक्षी मानकर अपना माजी सुधार रहे हैं। यह उपाय पित्र जनों की शान्ति स्वरुप भी समझा जा सकता है। उपाय के अंत में मिटटी के पात्र से श्रद्धा पूर्वक वृक्ष को अर्घ्य दें और जल से भर कर पात्र को बर्फी के पास ही रख दें। रुद्राक्ष को उठाकर उक्त मंत्र जपते हुए तथा यह भावना निरंतर बनाते हुए कि लक्ष्मी जी को आप घर में प्रवेश करवाने जा रहे हैं। अब रुद्राक्ष या तो

धारण कर लें अथवा इसे लाल कपड़े में लपेटकर अपनी पूजा से अथवा अन्य पवित्र स्थान पर स्थापित कर दें। नित्य एक नियम बनाकर मंत्र का नियमित जाप करते रहें।

गोपाल राजू (वैज्ञानिक)

(राजपत्रित अधिकारी) अ.प्रा.

ज्योतिष अनुसंधान केन्द्र

30, सिविल लाईन्स

रूड़की 247667 (उ.ख.)

फोन : (01332) 274370

मोः 09760111555

website : www.astrotantra4u.com

E-mail:gopalraju12@yahoo.com